व्याख्या— कवि अपनी [illegible] से कहता है कि तुम्हारे साथ न जाने मेरा कौन सा संबंध है, न जाने कैसा नाता है। मैं अपने हृदय के अंदर समाए हुए तुम्हारे स्नेह रूपी जल को जितना ही बाहर निकालता हूँ वह उतना ही मेरे चारों ओर फिर आता है। ऐसा लगता है मानो दिल में कोई झरना बह रहा है। वह स्नेह के मीठे पानी के समान है। यद्यपि तुम मुझे छोड़कर जा चुकी हो तथापि तुम्हारे स्नेह को मैं आज भी महसूस करता हूँ। इधर मन में प्रेम है और उधर तुम्हारा चाँद जैसा मुसकुराता हुआ चेहरा अपने अद्भुत सौंदर्य के प्रकाश से मुझे नहलाता रहता है।

कवि का आंतरिक और बाह्य जगत दोनों [illegible] के प्रेम से संचालित है।

कवि चाँद की तरह आत्मा पर झुका चेहरा भूलकर अंधकार अमावस्या में नहाने की बात इसलिए करता है क्योंकि कवि [illegible] के प्रकाश से निकलना चाहता है। वह यथार्थ में रहना चाहता है जीवन में सदैव सबकुछ अच्छा नहीं रहता। कवि अब स्वयं के भरोसे जीवन जीना चाहता है। कवि [illegible] के स्नेह से स्वयं को मुक्त करके आत्मनिर्भर बनना चाहता है।

4- तुम्हें भूल जाने की
दक्षिण ध्रुवी अंधकार- अमावस्या
शरीर पर, चेहरे पर, अंतर में पा लूँ मैं
झेलूँ मैं, उसी में, नहा लूँ मैं
इसलिए कि तुमसे ही परिवेष्टित आच्छादित
रहने का रमणीय यह उजेला अब
सहा नहीं जाता है।

(ख) 'घने अंधकार' - अमावस्या के लिए क्या विशेषण प्रयोग किया गया है और इससे विशेष्य में क्या अर्थ जुड़ता है?

उत्तर- घने अंधकार अमावस्या के लिए दक्षिणा ध्रुवी विशेषण का प्रयोग किया गया है जिसका आशय घुल जाने से है। इसके प्रयोग से अंधकार का घनत्व और बढ़ जाता है।

3 (ख) कवि ने व्यक्तिगत संदर्भ में किस स्थिति को अमावस्या कहा है?

उत्तर- कवि व्यक्तिगत संदर्भ में अंधकार को अपने शरीर व हृदय में बसा लेना चाहता है ताकि वह प्रेरक के स्नेह से अपने आप को दूर कर सके। कवि एकाकी जीवन जीना चाहता है और इसे ही उसने अमावस्या कहा है।

(ग) - इस स्थिति से ठीक विपरीत ठहरने वाली कौन सी स्थिति कविता में व्यक्त हुई है? इस वैपरीत्य को व्यक्त करने वाले शब्द का व्याख्यापूर्वक उल्लेख करें।

उत्तर- इस स्थिति से ठीक विपरीत ठहरने वाली स्थिति है-

तुमसे ही परिवेष्टित आच्छादित
रहने का रमणीय यह उजेला

इन पंक्तियों के माध्यम से कवि अपनी मनःस्थिति को व्यक्त करता है। एक ओर प्रेरक के वियोग की ओर निराशा गहरी अमावस्या से व्यक्त हुई है, तो दूसरी ओर प्रेरक के स्नेह का निरन्तर उजाला इतना अधिक महान हो गया है कि अब उसे सहना कठिन हो गया है। पहली स्थिति में प्रकाश की एक किरण तक नहीं है और दूसरी स्थिति में उजाला चारों ओर से घिरा हुआ है।

(9)

(घ)- कवि अपने संबोध्य (जिसको कविता संबोधित है, कविता का 'तुम') को पूरी तरह भूल जाना चाहता है, इस बात को प्रभावी तरीके से व्यक्त करने के लिए क्या युक्ति अपनाई है? रेखांकित अंशों को ध्यान में रखकर उत्तर दें।

उत्तर- कवि अपने संबोध्य को पूरी तरह भूल जाना चाहता है इस बात को प्रभावी तरीके से व्यक्त करने के लिए वह अपने प्रेरक को भूल जाने के लिए उसके प्रभाव को शरीर और हृदय में उतार लेने, झेलने यहाँ तक कि नहा लेने की युक्ति अपनाता है। वह अंधकार में विलीन होना चाहता है ताकि प्रेरक की स्मृति रूपी प्रकाश की किरण उसे छू न सके।

5- 'बहलाती सहलाती आत्मीयता बरदाश्त नहीं होती है' और कविता के शीर्षक 'सहर्ष स्वीकारा है' में आप कैसे अंतर्विरोध पाते हैं। चर्चा कीजिए।

उत्तर- यद्यपि दोनों में विरोधाभास वाली स्थिति है। कविता के प्रारंभ में कवि जीवन के हर-दुख-सुख को सहर्ष स्वीकार करता है क्योंकि वह सब उसकी प्रेरक को प्यारा है। वह हर घटना दशा को प्रेरक की देन मानता है। दूसरी तरफ वह प्रेरक की आत्मीयता को बरदाश्त नहीं कर पाता। एक की स्वीकृति और दूसरी की अस्वीकृति दोनों में अंतर्विरोध है।

H.W. Assignment.

1- 'प्रेरणा' शब्द पर सोचिए और उसके महत्व पर प्रकाश डालते हुए जीवन के वे प्रसंग याद कीजिए जब माता-पिता, दीदी-भैया, शिक्षक या कोई महापुरुष/महानारी आपके अँधेरे क्षणों में प्रकाश भर गए।

2. 'भय' शब्द पर विचार करते हुए यह बताइए कि आपके मन में किन-किन चीजों का भय बैठा है? उससे निबटने के लिए आप क्या करते है?